# विषय: परिसर में लावारिस कुत्तों की बढ़ती संख्या पर एक निर्वाक

## 1. भूमिका एवं समस्या का परिचय

आईआईटी कानपुर केवल अध्ययन और शोध का संस्थान नहीं है बल्कि यह एक पूर्ण विकसित आवासीय परिसर भी है। यहाँ स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्र, शोधार्थी, प्राध्यापक तथा बड़ी संख्या में गैर शैक्षणिक कर्मचारी अपने परिवारों सहित निवास करते हैं। इस दृष्टि से आईआईटी कानपुर को केवल एक शैक्षणिक संस्थान कहना पर्याप्त नहीं होगा, यह अपने आप में एक लघु नगर के समान है। इस परिसर में मानव गतिविधियों के साथ-साथ अन्य जीवों की उपस्थिति भी स्वाभाविक रूप से देखने को मिलती है। आईआईटी कानपुर परिसर में सबसे अधिक दिखाई देने वाले पशुओं में कुत्ते प्रमुख हैं। वर्षों से कुत्ते परिसर का हिस्सा रहे हैं और वे यहाँ के दैनिक जीवन में विभिन्न रूपों में उपस्थित रहे हैं।

कुछ लोग नियमित रूप से उन्हें भोजन उपलब्ध कराते हैं और उनके प्रति स्नेह एवं सहानुभूति व्यक्त करते हैं, जबकि कुछ अन्य लोगों के लिए उनकी उपस्थिति भय, असहजता या चिंता का कारण बनती है। यह आम बात है कि कुत्ते परिसर के लगभग हर हिस्से में दिखाई दे जाते हैं जैसे अकादमिक क्षेत्रों में, मामा मियो, ओपन एयर थिएटर (OAT) जैसे सार्वजनिक स्थानों पर, तथा प्राध्यापकों और कर्मचारियों के आवासीय क्षेत्रों में भी। इस व्यापक उपस्थिति ने कुत्तों को परिसर के दैनिक जीवन का एक स्थायी अंग बना दिया है।

हालाँकि, कुत्तों की यह सर्वव्यापक उपस्थिति सभी के लिए समान अनुभव नहीं लेकर आती। जहाँ कुछ लोगों को हर स्थान पर कुत्तों की मौजूदगी से अपनापन और सकारात्मक भावनाएँ महसूस होती हैं, वहीं अन्य लोगों के लिए यही उपस्थिति डर और मानसिक असहजता का कारण बन जाती है। यह विरोधाभास इस मुद्दे को केवल व्यक्तिगत पसंद या नापसंद का प्रश्न नहीं रहने देता बल्कि इसे एक सामूहिक अनुभव के रूप में देखने की आवश्यकता उत्पन्न करता है।

हाल के समय में परिसर में लावारिस कुत्तों की संख्या में वृद्धि को लेकर चर्चाएँ अधिक मुखर हुई हैं। कई लोगों का मानना है कि कुत्तों की संख्या में यह वृद्धि पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से महसूस की जा रही है और इसके प्रभाव भी अधिक दिखाई देने लगे हैं। कचरे का फैलना, भोजन से जुड़ी समस्याएँ, कुत्तों द्वारा काटने या पीछा करने की घटनाएँ जैसे विषय अब बातचीत के केंद्र में आने लगे हैं।

इन अनुभवों और चर्चाओं के बीच यह प्रश्न उठता है कि क्या यह विषय अब केवल सामाजिक स्तर तक सीमित है या यह एक संस्थागत स्तर की समस्या का रूप ले चुका है। हाल के वर्षों में इस दिशा में कुछ कदम उठाए जाने की बात भी सामने आती रही है और प्रशासनिक तथा पशु कल्याण से जुड़े प्रयासों की चर्चा होती रही है। उदाहरणस्वरूप, हाल ही में Animal Welfare Cell की ओर से आने वाले ईमेल्स की संख्या में वृद्धि को कई सदस्यों ने नोटिस किया होगा जो यह संकेत देता है कि यह मुद्दा संस्थागत विमर्श का हिस्सा बन रहा है।

इसी पृष्ठभूमि में यह निर्वाक परिसर में बढ़ती कुत्तों की संख्या और उससे उत्पन्न प्रभावों पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य किसी एक दृष्टिकोण को सही ठहराना नहीं बल्कि विभिन्न अनुभवों और धारणाओं को सामने लाकर इस जटिल समस्या को समझना है। समाधान सुझाने से पहले यह आवश्यक है कि समस्या की प्रकृति उसके प्रभाव और उससे जुड़े विभिन्न पक्षों को तटस्थ और संतुलित रूप से देखा जाए और यही प्रयास इस निर्वाक के माध्यम से किया गया है।

## 2. छात्रों के अनुभव एवं दैनिक जीवन पर प्रभाव

आईआईटी कानपुर परिसर में कुत्तों की उपस्थिति को लेकर छात्रों का अनुभव किसी एक दिशा में झुका हुआ नहीं दिखता। सर्वेक्षण से यह संकेत मिलता है कि अधिकांश छात्र इस मुद्दे को न तो पूरी तरह स्वीकार करते हैं और न ही पूरी तरह खारिज करते हैं।

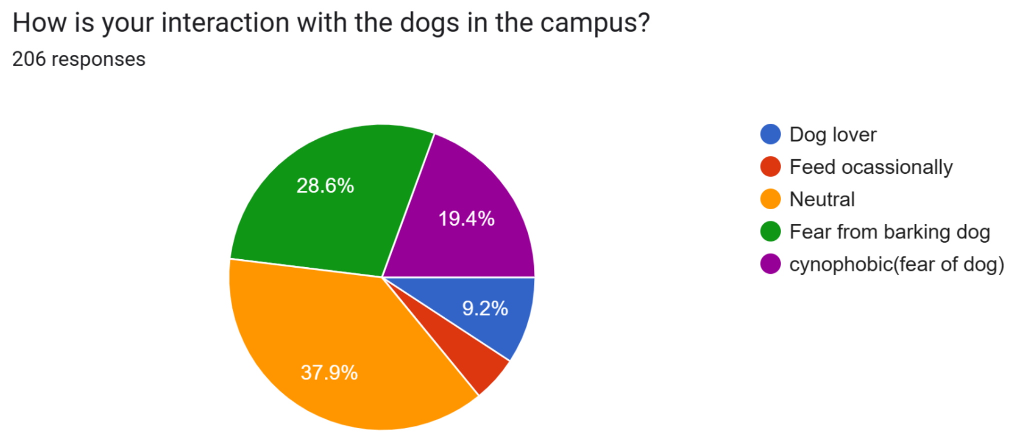


समग्र रूप से देखने पर यह सामने आता है कि सबसे बड़ा वर्ग स्वयं को तटस्थ मानता है। यह तटस्थता उदासीनता नहीं, बल्कि एक तरह की “अनुकूलन की मजबूरी” को दर्शाती है। छात्र न तो कुत्तों से गहरा लगाव महसूस करते हैं, न ही खुला विरोध। इसके समानांतर एक उल्लेखनीय समूह ऐसा भी है जो कुत्तों की आवाज़ अचानक सामने आ जाने या पीछा किए जाने जैसी स्थितियों से असहजता और डर महसूस करता है। इसके विपरीत कुत्तों के प्रति सक्रिय स्नेह या देखभाल का भाव रखने वाले छात्र अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि परिसर में कुत्तों की उपस्थिति को सामान्य मान लेने वाले छात्रों की संख्या, उन्हें अपनाने या उनकी जिम्मेदारी लेने वाले छात्रों से अधिक है।

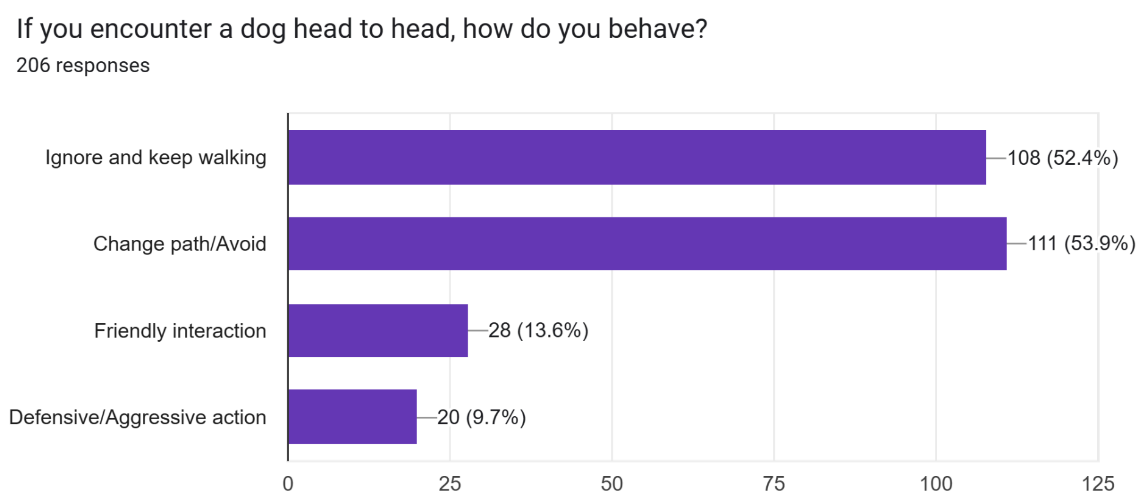

चार्ट से यह उभरकर आता है कि अधिकांश छात्र या तो चुपचाप आगे बढ़ जाना पसंद करते हैं या फिर रास्ता बदल लेते हैं। मित्रतापूर्ण व्यवहार करने वाले छात्रों की संख्या सीमित दिखाई देती है जबकि कुछ मामलों में रक्षात्मक प्रतिक्रिया भी सामने आती है। यह प्रवृत्ति इस बात की ओर इशारा करती है कि कुत्तों की मौजूदगी को छात्र एक सामान्य, लेकिन पूरी तरह सहज स्थिति के रूप में नहीं देखते।

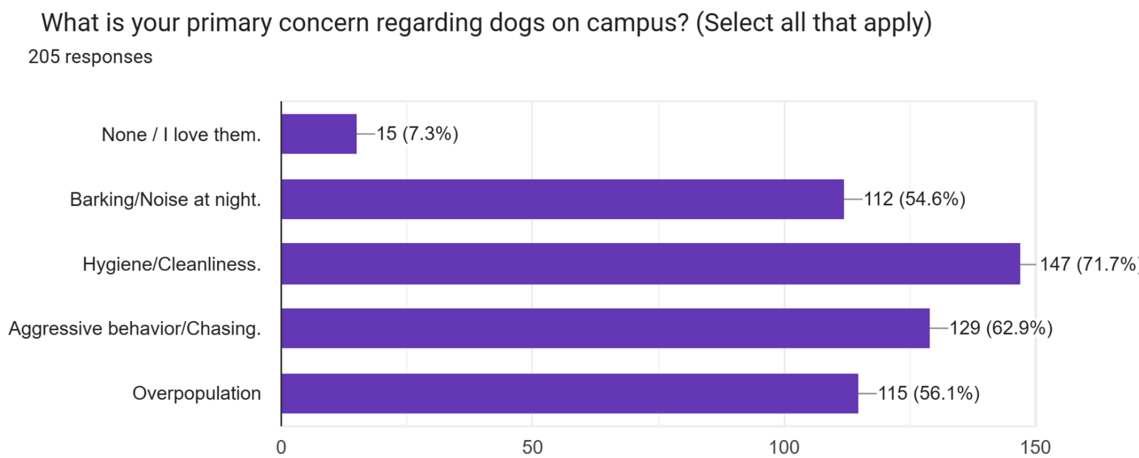


सबसे अधिक बार जिन बातों का ज़िक्र सामने आता है उनमें स्वच्छता, आक्रामक व्यवहार और कुत्तों की बढ़ती संख्या प्रमुख हैं। रात में भौंकने की आवाज़ जैसी बातें भी छात्रों की नींद और मानसिक शांति से जुड़ी हुई हैं। वहीं, बहुत कम छात्रों ने यह संकेत दिया कि उन्हें इन सभी बातों से कोई समस्या नहीं है। यह पैटर्न बताता है कि कुत्तों की उपस्थिति को लेकर चिंताएँ व्यापक हैं और वे स्वास्थ्य, सुरक्षा और जीवन-गुणवत्ता जैसे मुद्दों से जुड़ी हैं।

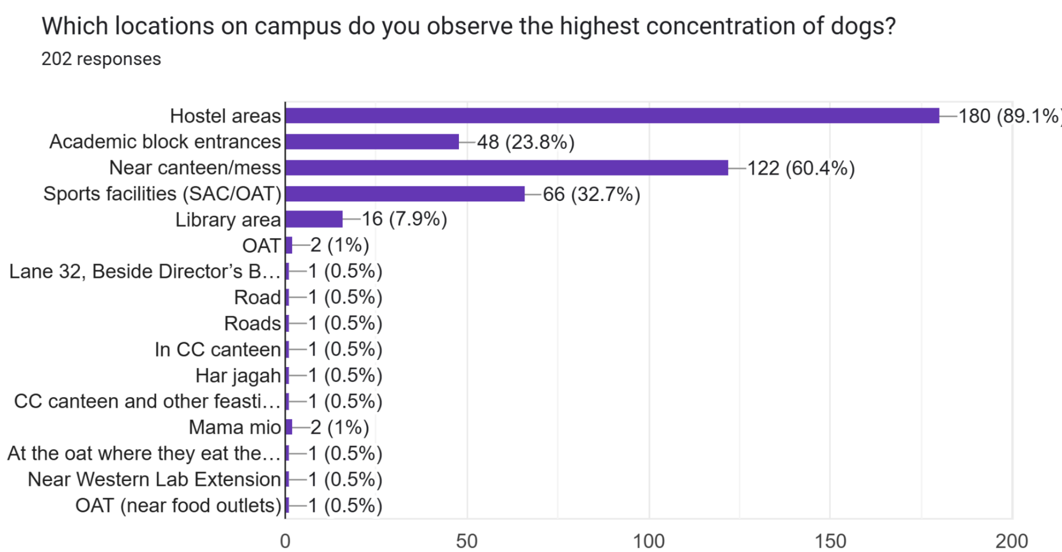

छात्रों के अनुसार, कुत्ते सबसे अधिक उन्हीं क्षेत्रों में देखे जाते हैं जहाँ छात्र अपना अधिकांश समय बिताते हैं जैसे की हॉस्टल, मेस और कैंटीन के आसपास। इससे यह स्पष्ट होता है कि कुत्तों की उपस्थिति और छात्रों की दैनिक गतिविधियाँ लगातार एक-दूसरे से टकराती रहती हैं। अकादमिक क्षेत्रों और लाइब्रेरी जैसे स्थानों में उनकी उपस्थिति अपेक्षाकृत कम बताई गई है, जो इस समस्या को मुख्यतः आवासीय और भोजन से जुड़े क्षेत्रों तक केंद्रित करती है।

व्यक्तिगत सामान को नुकसान पहुँचने का अनुभव भी कई छात्रों ने साझा किया।

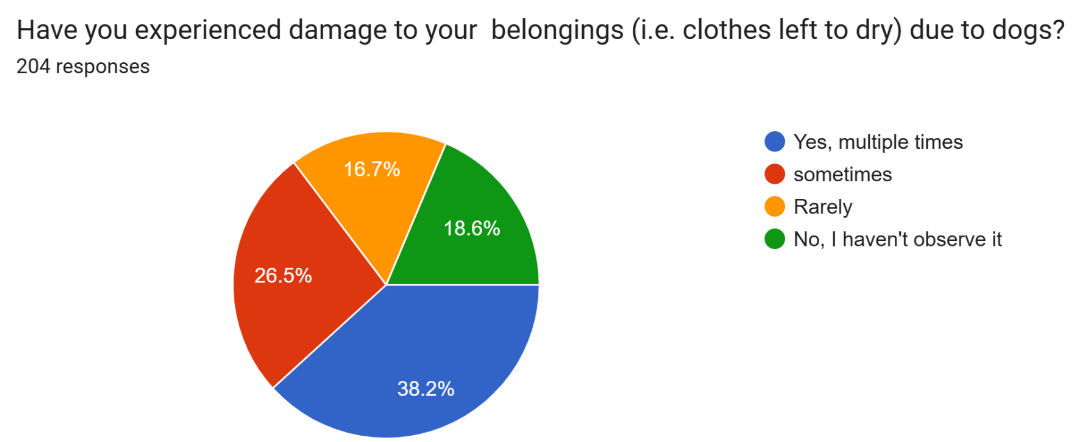


चार्ट से यह समझ आता है कि कपड़े फटने या सामान खराब होने जैसी घटनाएँ अपवाद नहीं रहीं। हालाँकि कुछ छात्रों ने बताया कि उन्हें ऐसा कभी अनुभव नहीं हुआ फिर भी एक बड़ा हिस्सा इसे अपनी दिनचर्या का एक परेशान करने वाला पहलू मानता है। यह अनुभव छात्रों की उस भावना को मजबूत करता है कि समस्या केवल “मौजूदगी” की नहीं, बल्कि उसके व्यावहारिक असर की भी है।

## कुत्तों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण

साक्षात्कारों से यह भी सामने आया कि कुछ छात्र कुत्तों को समस्या के बजाय सह-अस्तित्व के संदर्भ में देखते हैं। इन छात्रों के अनुसार कुत्ते सामान्यतः शांत रहते हैं और गंभीर घटनाएँ अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं। उनके अनुभव में, लिफ्ट में कुत्तों का आना, कूड़ेदानों का पलटना या कपड़ों का फटना जैसी घटनाएँ मानवीय लापरवाही से जुड़ी हैं। इस दृष्टिकोण में यह विचार प्रमुख है कि यदि कुत्ते परिसर का हिस्सा हैं तो छात्रों और प्रशासन की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने व्यवहार और व्यवस्थाओं को उसके अनुसार ढालें। साक्षात्कारों से यह समझ आता है कि इस वर्ग के लिए कुत्तों का मुद्दा करुणा और साझा जिम्मेदारी का प्रश्न है।

## भय और असहजता का दृष्टिकोण

इसके विपरीत, कुछ छात्रों के अनुभव स्पष्ट रूप से असहजता और चिंता से भरे हुए हैं। उनके अनुसार, हॉस्टल विंग्स, मेस और OAT जैसे स्थानों पर कुत्तों की मौजूदगी निजी स्थान के उल्लंघन जैसी महसूस होती है। भोजन के आसपास कुत्तों का घूमना, उनके झुंड में आक्रामक व्यवहार और संभावित स्वास्थ्य जोखिम, इन छात्रों के लिए दैनिक तनाव का कारण बनते हैं। साक्षात्कारों से यह संकेत मिलता है कि यह दृष्टिकोण कुत्तों से व्यक्तिगत नफरत से नहीं बल्कि स्वच्छता, सुरक्षा और संस्थागत व्यवस्था की

अपेक्षाओं से जुड़ा हुआ है।

**<u>निष्कर्ष</u>**

पूरे सर्वेक्षण और साक्षात्कारों को संक्षेप में इन तीन श्रेणियों में समझा जा सकता है:

- तटस्थता या अनुकूलन: छात्रों का सबसे बड़ा वर्ग 'तटस्थ' है। इसका मतलब यह नहीं कि उन्हें समस्या नहीं है, बल्कि यह कि उन्होंने कुत्तों की मौजूदगी को कैंपस जीवन का एक हिस्सा मानकर समझौता कर लिया है।
- दूरी और डर की प्राथमिकता: डेटा से पता चलता है कि कुत्तों को स्नेह देने वालों की तुलना में उनसे दूर रहने वालों की संख्या कहीं अधिक है। छात्र अक्सर अपना रास्ता बदल लेते हैं या चुपचाप निकल जाते हैं, जो यह संकेत देता है कि कुत्तों की मौजूदगी उन्हें पूरी तरह सहज महसूस नहीं कराती।
- स्थानिक टकराव: कुत्तों की सबसे अधिक मौजूदगी उन्हीं जगहों पर है जहाँ छात्र सबसे ज़्यादा समय बिताते हैं—जैसे हॉस्टल, मेस और कैंटीन। यही कारण है कि यह मुद्दा केवल एक 'बाहरी' समस्या नहीं, बल्कि छात्रों के निजी स्थान (Personal Space) और मानसिक शांति (जैसे रात में नींद खराब होना) में सीधा दखल बन गया है।

इस खंड का विश्लेषण हमें दो प्रमुख वास्तविकताओं की ओर ले जाता है:

1. सहानुभूति बनाम सुरक्षा की बहस: जहाँ कुछ छात्र इसे 'सह-अस्तित्व' और हमारी जिम्मेदारी मानते हैं, वहीं एक बड़ा वर्ग इसे स्वच्छता और सुरक्षा में चूक के रूप में देखता है। यह दिखाता है
2. कि कैंपस में विचारों का ध्रुवीकरण है, जिससे किसी एक सर्वसम्मत समाधान पर पहुँचना चुनौतीपूर्ण है।
3. मानवीय लापरवाही बनाम पशु व्यवहार: साक्षात्कारों से यह अहम बात निकलकर आई है कि कूड़ेदानों का पलटना या लिफ्ट में कुत्तों का आना जैसी समस्याओं का एक सिरा मानवीय प्रबंधन से भी जुड़ा है। यदि कचरा प्रबंधन बेहतर हो, तो कुत्तों का व्यवहार कम आक्रामक हो सकता है।
4. नकारात्मक अनुभवों का पलड़ा भारी: हालांकि सहानुभूति रखने वाले छात्र भी मौजूद हैं, लेकिन सामूहिक रूप से नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ (डर, सामान का नुकसान, गंदगी) संख्या में अधिक हैं। यह प्रशासन के लिए एक स्पष्ट संकेत है कि वर्तमान स्थिति को 'सामान्य' मानकर छोड़ा नहीं जा सकता।

## 3. भावनात्मक एवं मानसिक कल्याण पर प्रभाव

कुत्तों की उपस्थिति को लेकर चर्चा अक्सर सुरक्षा, स्वच्छता या प्रशासन तक सीमित रह जाती है पर सर्वेक्षण से यह भी संकेत मिलता है कि इस मुद्दे का एक भावनात्मक और मानसिक पक्ष भी है। छात्रों से पूछे गए प्रश्न यह समझने का प्रयास करते हैं कि क्या परिसर के कुत्ते तनाव, अकेलेपन या घर से दूर होने की भावना को किसी रूप में प्रभावित करते हैं।

Have you ever interacted with a campus dog to relieve stress or take a break from work?
204 responses

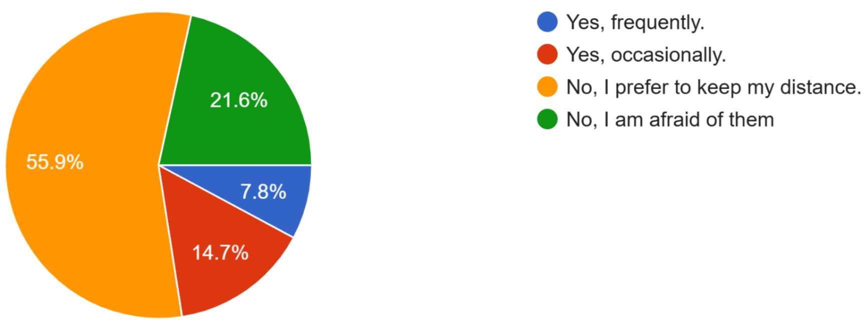


प्रतिक्रियाओं को समग्र रूप से देखने पर यह सामने आता है कि कुत्तों से भावनात्मक सहारा लेने वाले छात्र अल्पसंख्यक हैं। कुछ छात्रों ने यह बताया कि वे कभी-कभार या नियमित रूप से कुत्तों के साथ समय बिताकर पढ़ाई या काम के तनाव से राहत महसूस करते हैं। इसके विपरीत, एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो या तो कुत्तों से दूरी बनाए रखना पसंद करता है या उनसे डर महसूस करता है। यह विभाजन दर्शाता है कि जहाँ कुत्ते कुछ छात्रों के लिए सहजता और ब्रेक का माध्यम बन सकते हैं, वहीं अधिकांश छात्रों के लिए वे मानसिक सुकून का स्रोत नहीं हैं।

Do you feel that having "community pets" in the hostel makes the environment feel more like home?
204 responses

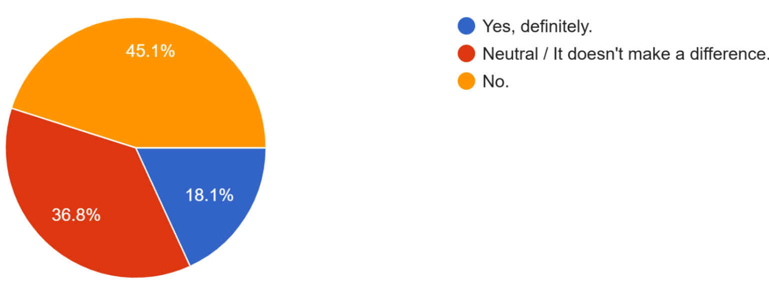


चार्ट से यह संकेत मिलता है कि कुछ छात्रों को हॉस्टल में कुत्तों की मौजूदगी से वातावरण अधिक घरेलू और अपनापन भरा महसूस होता है। हालाँकि, सबसे बड़ा समूह ऐसा है जो इस उपस्थिति को भावनात्मक रूप से तटस्थ मानता है और उनके लिए कुत्तों का होना या न होना माहौल में कोई विशेष बदलाव नहीं लाता। वहीं, एक उल्लेखनीय संख्या में छात्र ऐसे भी हैं जो इसे नकारात्मक रूप में देखते हैं और मानते हैं कि इससे “घर जैसा” एहसास नहीं बनता।

भावनात्मक समर्थन के प्रश्न पर प्रतिक्रियाएँ और भी मिश्रित तस्वीर पेश करती हैं।

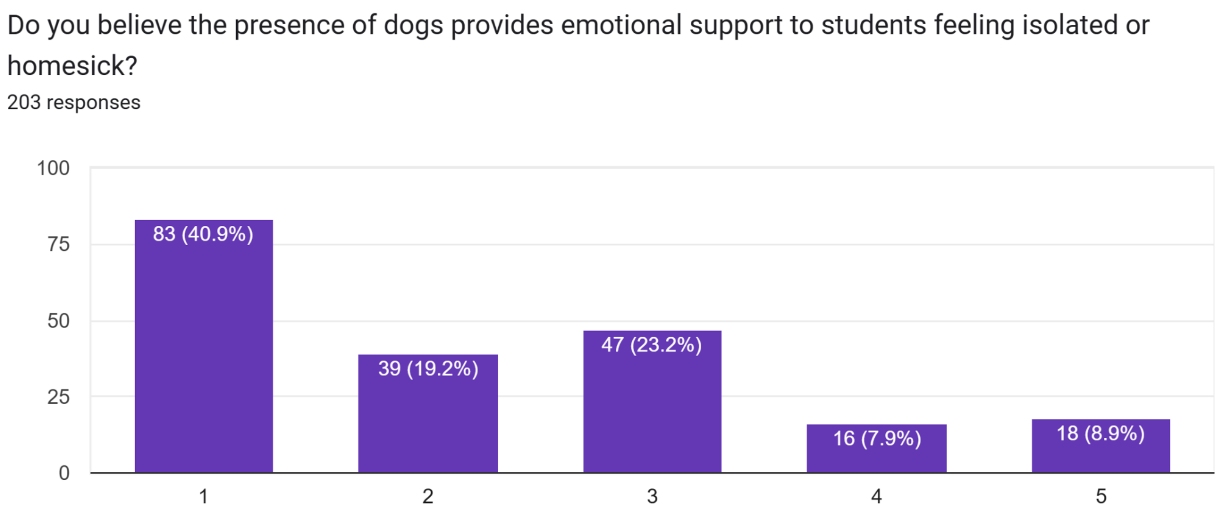


यहाँ यह देखा जा सकता है कि कुछ छात्र मानते हैं कि कुत्तों की उपस्थिति अकेलेपन या घर की याद से जूझ रहे छात्रों के लिए सहायक हो सकती है, जबकि कई अन्य इस विचार से असहमत दिखाई दिए। बीच के विकल्पों का चयन यह संकेत  है कि बड़ी संख्या में छात्र इस प्रभाव को लेकर अनिश्चित हैं।

यह अनुभाग स्पष्ट करता है कि कुत्तों की उपस्थिति का प्रभाव केवल शारीरिक सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके गहरे मनोवैज्ञानिक पहलू भी हैं। इसका संक्षिप्त सार इस प्रकार है:

- भावनात्मक विभाजन: परिसर के कुत्ते छात्रों के लिए दो विपरीत भूमिकाएँ निभाते हैं। जहाँ एक छोटा समूह उन्हें तनाव कम करने और घर की कमी पूरी करने वाले साथी के रूप में देखता है, वहीं बहुसंख्यक वर्ग के लिए वे मानसिक सुकून के बजाय असुरक्षा और दूरी का कारण हैं।
- तटस्थता और अनिश्चितता: सर्वेक्षण का एक बड़ा हिस्सा यह दर्शाता है कि अधिकांश छात्र कुत्तों की उपस्थिति से कोई भावनात्मक जुड़ाव महसूस नहीं करते। उनके लिए कुत्तों का होना माहौल में कोई 'अपनापन' नहीं जोड़ता, बल्कि वे इसे एक सामान्य प्रशासनिक स्थिति की तरह देखते हैं।

यह निष्कर्ष हमें बताता है कि कैंपस में कुत्तों के साथ "सह-अस्तित्व" व्यक्तिपरक है। कुत्तों का प्रभाव किसी छात्र के पिछले अनुभवों और व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। इसलिए, प्रशासन की किसी भी नीति को उन छात्रों की भावनाओं का सम्मान करना होगा जो कुत्तों से जुड़ाव महसूस करते हैं, लेकिन साथ ही उन छात्रों की मानसिक शांति को प्राथमिकता देनी होगी जिनके लिए कुत्तों की मौजूदगी दैनिक तनाव का स्रोत है।

# 4. स्वच्छता एवं सुरक्षा

आईआईटी कानपुर परिसर में कुत्तों की उपस्थिति को लेकर छात्रों के अनुभव केवल भावनात्मक या वैचारिक नहीं हैं, बल्कि वे प्रत्यक्ष रूप से स्वच्छता, संपत्ति और व्यक्तिगत सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। सर्वेक्षण और साक्षात्कार यह संकेत देते हैं कि कई छात्रों के लिए यह मुद्दा रोज़मर्रा के जीवन का एक व्यावहारिक पक्ष बन चुका है|

## 4.1 सामान्य स्वच्छता समस्याएँ एवं संपत्ति को नुकसान

छात्रावासों में स्वच्छता से जुड़ी समस्याएँ सबसे पहले और सबसे अधिक स्पष्ट रूप से सामने आती हैं।

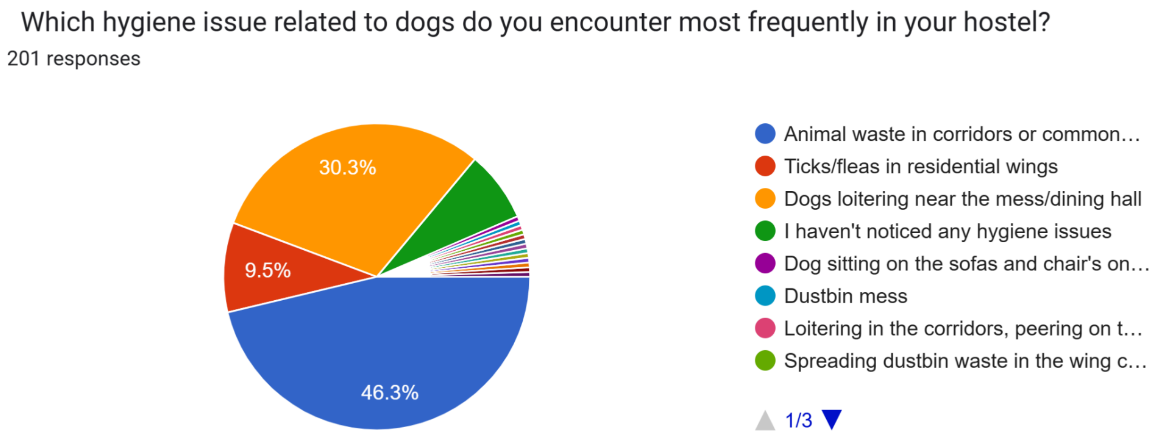


छात्रों द्वारा सबसे अधिक जिस समस्या का उल्लेख किया गया, वह कॉरिडोर और कॉमन एरिया में पशु अपशिष्ट की उपस्थिति है। इसके साथ ही, मेस और डाइनिंग हॉल के आसपास कुत्तों का घूमना भी एक नियमित अनुभव के रूप में उभरता है, जबकि एक छोटा समूह ऐसा रहा जिसने किसी विशेष स्वच्छता समस्या को नोटिस न करने की बात कही।

हॉल ऑफ़ रेज़िडेंस 10 के प्रेसिडेंट के अनुसार,

> "पहले तो रात में चिल्लाना, कपड़े फाड़ना और जूते उठा लेना *common* था… लेकिन अब कॉरिडोर और विंग्स में घूमना और गंदगी एक *regular issue* बन गया है।"

स्वच्छता से जुड़ी यह समस्या केवल हॉस्टल तक सीमित नहीं रहती। छात्रों ने यह भी बताया कि कुत्ते OAT और SAC जैसे साझा स्थानों में भी प्रवेश कर जाते हैं।

Have you observed dogs entering the OAT seating area or the SAC indoor facilities during an ongoing event or practice session?

199 responses

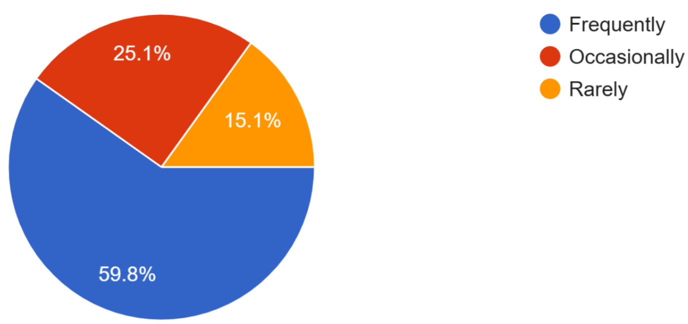


यह संकेत करता है कि कार्यक्रमों और अभ्यास सत्रों के दौरान भी अव्यवस्था और असहजता का अनुभव किया जाता है।संपत्ति को नुकसान पहुँचने की घटनाएँ भी व्यापक रूप से रिपोर्ट की गई हैं।

Have you experienced or witnessed any damage to personal/campus property caused by stray dogs? (Check all that apply)

193 responses

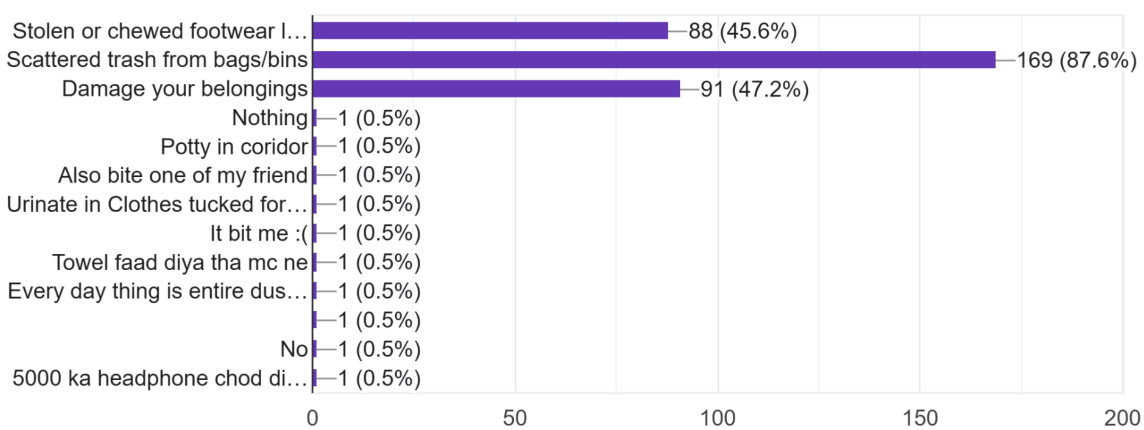


जूते चबाए जाना, कूड़े के बैग और डस्टबिन बिखर जाना, तथा व्यक्तिगत सामान को नुकसान पहुँचने जैसी घटनाएँ कई छात्रों द्वारा साझा की गईं। हॉल 10 के प्रेसिडेंट ने इसे “पहले छोटी बात मानी जाने वाली, लेकिन अब रोज़ की परेशानी” बताया।

## 4.2 भोजन से जुड़ी स्वच्छता और फूड आउटलेट्स पर असर

भोजन से जुड़े स्थानों पर कुत्तों की उपस्थिति को लेकर छात्रों की चिंता और अधिक तीव्र दिखाई देती है।

On a scale of 1-5, how much does the presence of dogs near the canteen/mess affect your dining experience?

205 responses

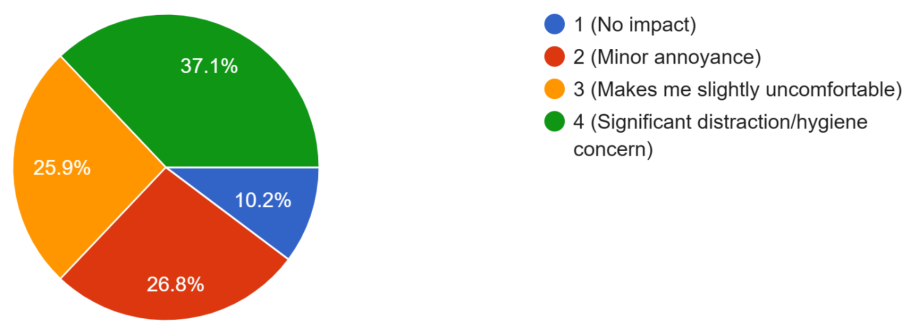


On a scale of 1–5, how does the presence of dogs around campus food outlets (e.g., DOAA Canteen, Mama Mio, OAT shops) affect your overall hangout experience?

203 responses

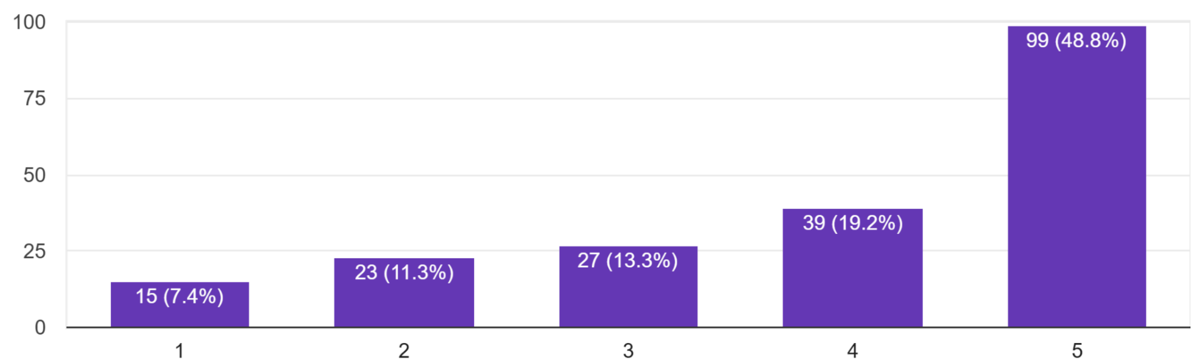


चार्ट्स यह दर्शाते हैं कि मेस, कैंटीन और लोकप्रिय हैंगआउट स्पॉट्स जैसे Mama Mio और OAT शॉप्स पर कुत्तों की मौजूदगी कई छात्रों के लिए असहजता और स्वच्छता से जुड़ी चिंता का कारण बनती है। यह असहजता केवल उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि भोजन करने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

Mama Mio के एक दुकानदार ने बताया,

> “अगर कोई बच्चा हाथ में खाने का सामान लेकर जा रहा है, तो कुत्ते उसके पीछे पड़ जाते हैं। कभी-कभी सामान छीन भी लेते हैं।”

एक अन्य दुकानदार ने यह भी उल्लेख किया कि पहले खुले डस्टबिन स्थिति को और खराब करते थे:

> “जब डस्टबिन खुले थे, तब बहुत कचरा फैलता था। अब जाली लगने के बाद थोड़ी सफाई

रहती है।”

हॉल 10 के प्रेसिडेंट ने मेस और कैंटीन से जुड़ा अपना अनुभव साझा करते हुए कहा,

> “मैं कैंटीन में ग्लास में चाय पीता ही नहीं हूँ, क्योंकि मैंने कई बार देखा है कि कुत्ते प्लेट और कप चाट रहे होते हैं।”

इन अनुभवों से यह स्पष्ट होता है कि भोजन से जुड़ी स्वच्छता छात्रों और दुकानदारों दोनों के लिए एक संवेदनशील मुद्दा है, भले ही कुछ स्थानों पर व्यवस्थागत सुधारों से स्थिति में आंशिक सुधार हुआ हो।

## 4.3 सुरक्षा से जुड़े अनुभव: पीछा, काटने की घटनाएँ और दुर्घटनाएँ

स्वच्छता से आगे बढ़ते हुए, सुरक्षा से जुड़े प्रश्न छात्रों की चिंता का सबसे गंभीर पक्ष बनकर सामने आते हैं।

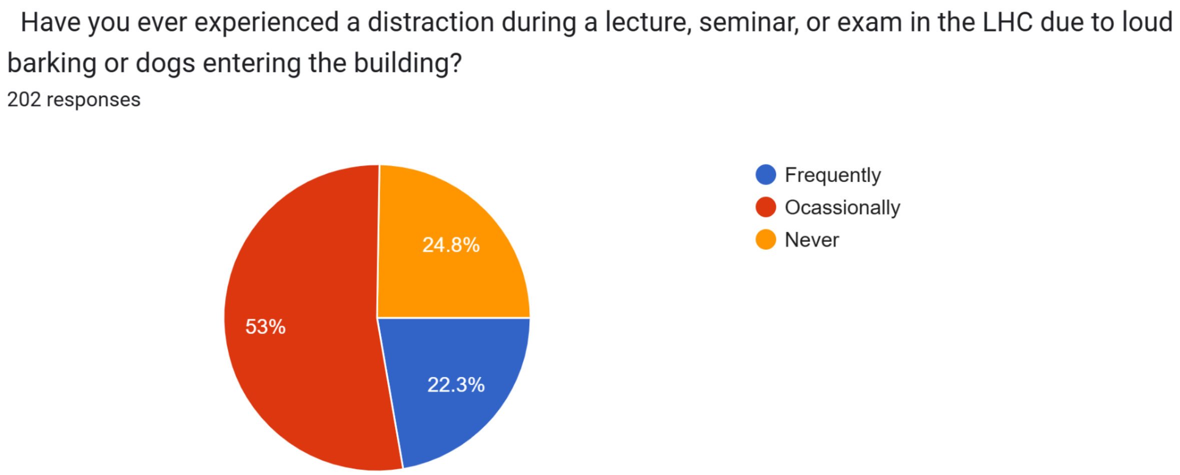


छात्रों ने बताया कि अकादमिक भवनों में भी कुत्तों की उपस्थिति से सेमिनार और परीक्षाओं के दौरान ध्यान भंग होता है विशेषकर जब भौंकने की आवाज़ आती है या कुत्ते इमारत के भीतर प्रवेश कर जाते हैं।

सड़क और खेल गतिविधियों के दौरान पीछा किए जाने के अनुभव भी सर्वेक्षण में प्रमुख रूप से उभरे हैं।

How often have you been "chased" by a stray dog while cycling on campus roads (e.g., the Main Road, Academic Road, or Hostel cycle tracks)?
203 responses

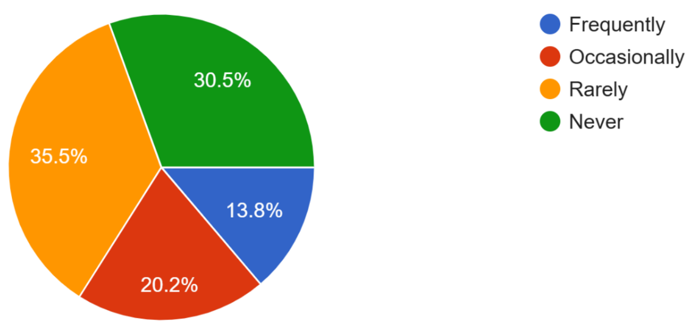


While performing high-intensity movements (e.g., sprinting, football drills, or long-distance running), how often do stray dogs exhibit "chasing" behavior toward you?
198 responses

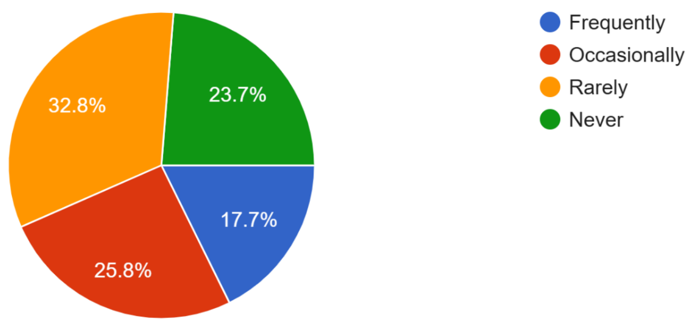


इन प्रतिक्रियाओं से यह संकेत मिलता है कि साइकिल चलाते समय या उच्च तीव्रता वाली खेल गतिविधियों के दौरान कुत्तों द्वारा पीछा किया जाना कुछ छात्रों के लिए बार-बार होने वाला अनुभव है, जिससे गिरने और दुर्घटना का जोखिम बढ़ जाता है।

इन व्यक्तिगत अनुभवों को स्वास्थ्य केंद्र से प्राप्त जानकारी एक औपचारिक और संस्थागत संदर्भ प्रदान करती है। स्वास्थ्य केंद्र के अनुसार,

> *"हर एक–दो दिन में कम से कम एक डॉग-बाइट का मामला सामने आता है, और कई बार एक ही दिन में 2–3 केस भी आ जाते हैं।"*
> उन्होंने यह भी बताया कि कुछ समय पहले एक ही दिन में 13–14 लोगों के काटे जाने की घटनाएँ रिपोर्ट हुई थीं, और बीते दो वर्षों में इन मामलों की संख्या और आवृत्ति दोनों में वृद्धि देखी गई है।

हॉल ऑफ़ रेज़िडेंस 10 के प्रेसिडेंट ने हालिया घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा,

> “पिछले *15–20* दिनों में काटने की रिपोर्ट आनी शुरू हो गई है… बच्चे बहुत डरे हुए हैं क्योंकि कोई गारंटी नहीं है कि कब किस पर अटैक हो जाए।”

दुकानदारों ने भी सड़क सुरक्षा पर चिंता जताई। एक दुकानदार के अनुसार,

> “कभी-कभी ये साइकिल वालों को दौड़ा लेते हैं, जिससे लोग गिर जाते हैं। बाइक वालों के साथ तो एक्सीडेंट का भी खतरा रहता है।”

कैंपस के छात्रों की चिंता और अनुभव प्रस्तुत करता हुआ एक ‘वर्ड क्लाउड’

## <u>निष्कर्ष</u>

सर्वेक्षण और साक्षात्कारों से यह साफ है कि कुत्तों की उपस्थिति कैंपस के हर हिस्से हॉस्टल से लेकर अकादमिक क्षेत्रों तक को प्रभावित कर रही है। इसे हम तीन मुख्य बिंदुओं में समझ सकते हैं:

- सुरक्षा का डर: 80% से अधिक छात्र साइकिल चलाते या दौड़ते समय कुत्तों के पीछा करने की समस्या झेल चुके हैं। यह आंकड़ा बताता है कि कैंपस की सड़कें अब छात्रों के लिए पूरी तरह सुरक्षित नहीं महसूस होतीं।
- स्वच्छता की कमी: फूड आउटलेट्स और खाने के क्षेत्रों में कुत्तों की मौजूदगी को सबसे बड़ा 'हाइजीन इश्यू' माना गया है। इसके अलावा, कचरा पात्रों से कचरा फैलाना गंदगी को और बढ़ाता है।
- गतिविधियों में बाधा: OAT और SAC जैसे क्षेत्रों में कुत्तों के दखल के कारण छात्रों की प्रैक्टिस और अन्य आयोजनों में लगातार खलल पड़ता है। साथ ही चप्पल चबाने और निजी सामान के नुकसान जैसी घटनाएं छात्रों के दैनिक जीवन में झुंझलाहट पैदा करती हैं।

# 5. परिसर में ज़िम्मेदार संस्थाएँ और उनकी भूमिकाएँ

आईआईटी कानपुर परिसर में कुत्तों से जुड़ा मुद्दा केवल व्यक्तिगत अनुभवों या भावनात्मक प्रतिक्रियाओं तक सीमित नहीं है, यह एक ऐसा विषय है जो कानून, प्रशासनिक जिम्मेदारियों और संस्थागत ढाँचों से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस खंड में उन संस्थाओं और व्यवस्थाओं को समझने की कोशिश की गई है, जो इस विषय से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हैं।

## 5.1 भारतीय कानून और न्यायिक दिशा-निर्देश

भारत में आवारा और सामुदायिक पशुओं से संबंधित कानून मुख्यतः **Prevention of Cruelty against Animals (PCA) Act, 1960** के अंतर्गत आते हैं। इस कानून का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी पशु के साथ अनावश्यक क्रूरता न हो।

इसके अंतर्गत कुछ प्रमुख बातें स्पष्ट हैं:

- आवारा कुत्तों को मारना, ज़हर देना या जबरन हटाना गैरकानूनी है।
- कुत्तों के लिए **Animal Birth Control (ABC)** और **Anti-Rabies Vaccination (ARV)** ही स्वीकार्य और मान्य उपाय हैं।
- स्थानीय प्रशासन और संस्थानों की जिम्मेदारी होती है कि वे नसबंदी और टीकाकरण के ज़रिए जनसंख्या नियंत्रण करें, न कि हिंसक तरीकों से।

सुप्रीम कोर्ट और विभिन्न उच्च न्यायालयों ने समय-समय पर यह भी कहा है कि कुत्तों को उनके "natural habitat" से जबरन बाहर नहीं किया जा सकता। हालांकि हालिया वर्षों में, विशेषकर दिल्ली से जुड़े कुछ मामलों में, अदालतों में यह सवाल भी उठा है कि क्या घनी आबादी वाले रिहायशी परिसर वास्तव में आवारा कुत्तों का प्राकृतिक आवास माने जा सकते हैं**?** यह बहस अभी भी पूरी तरह स्पष्ट निष्कर्ष तक नहीं पहुँची है।

इस कानूनी ढांचे के भीतर ही देश भर के शैक्षणिक परिसरों (जिनमें आईआईटी कानपुर भी शामिल है) को अपने समाधान तलाशने होते हैं।

## 5.2 एनिमल वेलफेयर सेल (AWC): उद्देश्य, संरचना और भूमिका

आईआईटी कानपुर का **Animal Welfare Cell (AWC)** 31 दिसंबर 2018 को गठित किया गया था। इस सेल की स्थापना का मुख्य उद्देश्य परिसर में **Prevention of Cruelty against Animals Act, 1960** के प्रावधानों को लागू करने के लिए एक संस्थागत ढांचा तैयार करना था।

AWC का कार्य केवल कुत्तों की देखभाल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक उद्देश्य परिसर में मानव–पशु सह-अस्तित्व को संवेदनशील, वैधानिक और व्यवस्थित बनाना है।

AWC की प्रमुख भूमिकाएँ इस प्रकार हैं:

- परिसर में आवारा कुत्तों के लिए नसबंदी **(Sterilization)** कार्यक्रमों का संचालन
- एंटी-रेबीज़ टीकाकरण ड्राइव्स का आयोजन

- स्थानीय नगर निगम और पशु कल्याण संगठनों के साथ समन्वय
- परिसर समुदाय के बीच जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने के प्रयास

संरचनात्मक रूप से, AWC में फैकल्टी, स्टाफ और छात्रों के प्रतिनिधि शामिल हैं। इसमें विभिन्न विभागों के प्रोफेसर, सेंट्रल एक्सपेरिमेंटल एनिमल फैसिलिटी के प्रतिनिधि, और स्टूडेंट्स जिमखाना के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

## 5.3 AWC के कार्य: आँकड़े और ज़मीनी शिकायतें

AWC के एक छात्र सदस्य के साथ हुए साक्षात्कार से कुछ सीमित लेकिन ठोस जानकारी सामने आई।

उनके अनुसार:

- अप्रैल 2025 से अब तक लगभग **120** कुत्तों का टीकाकरण किया गया है
- **30** कुत्तों की नसबंदी की जा चुकी है, और अभियान अभी जारी है
- हालिया एक ड्राइव में ही **57** कुत्तों को वैक्सीनेट किया गया है

इसी साक्षात्कार में यह भी सामने आया कि AWC को कई प्रकार की शिकायतें नियमित रूप से प्राप्त होती हैं। इनमें शामिल हैं:

- LHC और अकादमिक भवनों में कुत्तों का प्रवेश
- फैकल्टी और छात्रों द्वारा कुत्तों को खाना खिलाने से जुड़ी शिकायतें
- आयोजनों के दौरान फेंका गया भोजन और उससे उत्पन्न अव्यवस्था
- कुत्तों की आपसी लड़ाइयाँ
- पेशाब, गंदगी और सफाई में आने वाली समस्याएँ
- कार्यक्रमों और कक्षाओं में व्यवधान

## 5.4 AWC को लेकर जागरूकता और प्रभावशीलता पर छात्रों की राय

एक अहम प्रश्न यह भी है कि क्या परिसर के लोग वास्तव में AWC और उसकी भूमिका से परिचित हैं?

Are you aware of the Animal Welfare Cell (AWC) and their role in vaccination/sterilization on campus?
201 responses

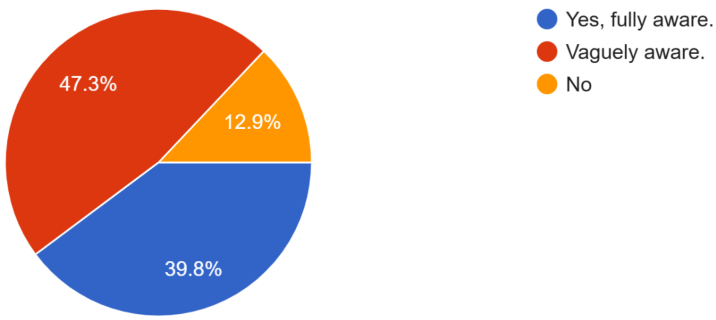


सर्वेक्षण के अनुसार केवल एक सीमित वर्ग ही ऐसा है जो AWC के कार्यों से पूरी तरह अवगत है। जबकि एक बड़ा हिस्सा या तो केवल नाम से परिचित है या फिर पूरी तरह अनजान है।

इसी तरह, जब छात्रों से पूछा गया कि वे कुत्तों से जुड़े मुद्दों को संभालने में वर्तमान प्रबंधन की प्रभावशीलता को कैसे आंकते हैं, तो प्रतिक्रियाएँ काफ़ी नकारात्मक रहीं।

How would you rate the current effectiveness of campus management in addressing issues related to stray dogs?
200 responses

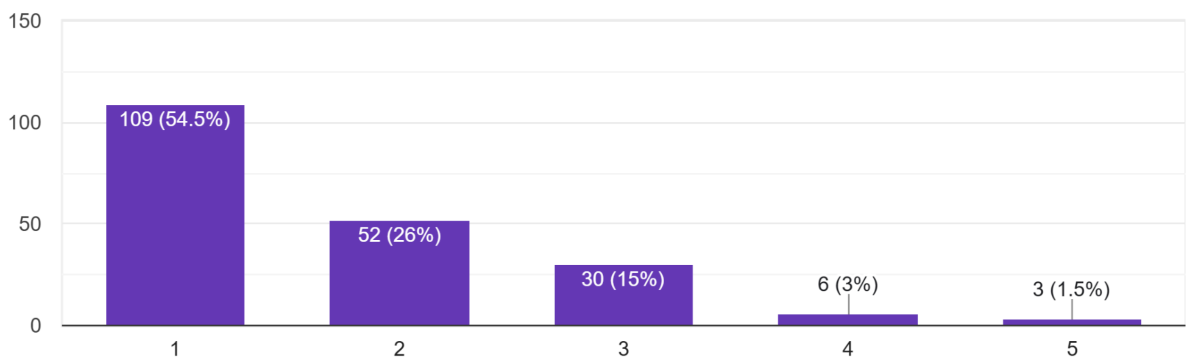


हॉल 10 के प्रेसिडेंट ने इस संदर्भ में अपनी निराशा व्यक्त करते हुए कहा:

> *"मैंने AWC को कई बार मेल की, लेकिन कोई* response *नहीं आया। अब ऐसे में हम क्या ही बोलें?"*

यह बयान यह दिखाता है कि संस्थागत ढाँचे और जमीनी संवाद के बीच एक अंतर महसूस किया जा रहा

है।

## 5.5 स्टूडेंट्स जिमखाना की भूमिका और दृष्टिकोण

जब स्टूडेंट्स जिमखाना के अध्यक्ष 'श्री आयन गुप्ता' से इस विषय पर बातचीत की गई, तो यह स्पष्ट हुआ कि परिसर में लावारिस कुत्तों का मुद्दा केवल छात्रों की दैनिक असुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि बड़े आयोजनों, प्रशासनिक निर्णयों और कानूनी सीमाओं से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। साक्षात्कार के दौरान कई ऐसे पहलू सामने आए, जो आमतौर पर सार्वजनिक चर्चा में दिखाई नहीं देते।

उन्होंने बताया कि बड़े सांस्कृतिक आयोजनों और फेस्ट्स के दौरान कुत्तों की उपस्थिति एक नियमित चुनौती बन जाती है। आम तौर पर सुरक्षा कर्मियों को यह ज़िम्मेदारी दी जाती है कि वे कुत्तों को कार्यक्रम स्थल के भीतर प्रवेश करने से रोकें। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की हिंसा या बल प्रयोग नहीं किया जाता। उनके शब्दों में, प्रयासों के बावजूद कई बार कुत्ते आयोजन क्षेत्र में प्रवेश कर ही जाते हैं, क्योंकि उनके विरुद्ध कोई कठोर या दंडात्मक कार्रवाई करना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं होता।

इस मुद्दे के नीतिगत पक्ष पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि कुत्तों से जुड़ा प्रश्न समय–समय पर संस्थान की सीनेट बैठकों में भी उठता रहा है। लेकिन प्रशासन को पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के अंतर्गत कार्य करना पड़ता है। इस कानून के अनुसार, कुत्तों को उनके प्राकृतिक आवास से बाहर नहीं किया जा सकता। वहीं, यह सवाल कि क्या पूरा परिसर वास्तव में कुत्तों का प्राकृतिक आवास माना जा सकता है, अब भी स्पष्ट नहीं है और इस पर अलग–अलग मत मौजूद हैं।

हाल के वर्षों में कुत्तों के व्यवहार में आए बदलाव पर चर्चा करते हुए उन्होंने एनिमल वेलफेयर सेल से मिली जानकारी साझा की। उनके अनुसार, कोविड महामारी के दौरान जब परिसर लगभग खाली था, तब कुत्तों की संख्या में वृद्धि हुई और वे मनुष्यों की निरंतर उपस्थिति के बिना बड़े हुए। अब, जब परिसर दोबारा पूरी तरह आबाद हो चुका है, तो इसी पृष्ठभूमि में कुत्तों के व्यवहार में अपेक्षाकृत अधिक आक्रामकता देखी जा रही है।

इसी कार्यकाल में एक नई पहल के रूप में एनिमल एलाइज़ विंग का गठन भी किया गया है। यह इकाई मुख्य रूप से कुत्तों के स्वास्थ्य पर निगरानी रखने और किसी कुत्ते में आक्रामक व्यवहार के संकेत मिलने पर उसकी सूचना एनिमल वेलफेयर सेल तक पहुँचाने का कार्य करती है। हालांकि, अध्यक्ष ने यह भी स्वीकार किया कि यह एक नई संरचना है और वर्तमान में इसके पास सीमित संसाधन तथा धन उपलब्ध हैं, जिसके कारण इसकी क्षमताएँ अभी पूरी तरह विकसित नहीं हो पाई हैं।

कुल मिलाकर, इस साक्षात्कार से यह सामने आता है कि स्टूडेंट्स जिमखाना स्तर पर समस्या को पहचाना जा रहा है और उसके समाधान के प्रयास भी हो रहे हैं, लेकिन ये प्रयास कानूनी ढांचे, संसाधनों की उपलब्धता और संस्थागत सीमाओं के भीतर ही संभव हैं।

## निष्कर्ष

संस्थाओं की भूमिका और कानूनी स्थिति को हम तीन मुख्य बिंदुओं में देख सकते हैं:

- कानूनी सीमाएँ बनाम जमीनी हकीकत: भारतीय कानून (PCA Act 1960) कुत्तों को हटाने या मारने की अनुमति नहीं देता, केवल नसबंदी और टीकाकरण (ABC & ARV) को ही मान्य मानता है। हालाँकि, यह बहस अब भी जारी है कि क्या एक घनी आबादी वाला शैक्षणिक संस्थान वास्तव में कुत्तों का "प्राकृतिक आवास" हो सकता है।

- AWC की सक्रियता और संचार अंतराल: एनिमल वेलफेयर सेल (AWC) नसबंदी और टीकाकरण के आंकड़े तो पेश कर रहा है (जैसे अप्रैल 2025 से 120 टीकाकरण), लेकिन छात्रों के बीच इसकी साख कम है। सर्वे के अनुसार अधिकांश छात्र इसके कार्यों से अनजान हैं और 'रिस्पॉन्स न मिलने' के कारण प्रशासन के प्रति निराशा महसूस करते हैं।
- संसाधनों की कमी और कोविड का असर: जिमखाना के अनुसार, कोविड के दौरान बढ़ी कुत्तों की संख्या और उनके व्यवहार में आई आक्रामकता एक बड़ी चुनौती है। 'एनिमल एलाइज़ विंग' जैसी नई पहल तो की गई है, लेकिन बजट और संसाधनों की कमी के कारण इनके परिणाम अभी सीमित हैं।

यह खंड हमें यह समझाने में मदद करता है कि समाधान में देरी क्यों हो रही है:

1. मैनेजमेंट और छात्रों के बीच 'कम्युनिकेशन गैप': समस्या केवल कुत्तों की संख्या नहीं है, बल्कि छात्रों और संबंधित संस्थाओं (AWC) के बीच संवाद की कमी है। जब तक छात्र प्रशासन की कोशिशों को देख नहीं पाएंगे, तब तक असंतोष बना रहेगा।
2. कानूनी विवशता: प्रशासन एक तरफ छात्रों की सुरक्षा के लिए जवाबदेह है और दूसरी तरफ सख्त पशु-अधिकार कानूनों से बंधा हुआ है। यह "दोहरी चुनौती" किसी भी त्वरित समाधान की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है।
3. दीर्घकालिक नीति की आवश्यकता: जिमखाना और AWC के प्रयास अभी 'तदर्थ' (Ad-hoc) या टुकड़ों में लग रहे हैं। एक ऐसे एकीकृत ढांचे की ज़रूरत है जहाँ कचरा प्रबंधन, फीडिंग ज़ोन और चिकित्सा निगरानी एक साथ काम करें।

# 6. सुझाव: संतुलन की दिशा में व्यावहारिक उपाय

आईआईटी कानपुर में कुत्तों से जुड़े अनुभव यह बताते हैं कि समस्या केवल "उन्हें हटाना" या "देखभाल करना" तक सीमित नहीं है; यह एक व्यापक, संतुलित और व्यावहारिक समाधान की मांग करता है, जो सुरक्षा, स्वच्छता और पशु-कल्याण तीनों को साथ में स्थिर कर सके। नीचे कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं, जो न केवल यहाँ के परिप्रेक्ष्य में उपयुक्त हैं, बल्कि अन्य संस्थानों में अपनाए गए उपायों से प्रेरित हैं।

## 6.1 परिसर-व्यापी समन्वित स्टेरिलाइज़ेशन और वैक्सीनेशन

इंटरव्यू में स्पष्ट संकेत यह मिलता है कि अलग-अलग स्थानों पर बिखरा हुआ प्रयास कम असर दिखा रहा है। जैसा सुझाव मिला कि

> "पूरा कैंपस एक साथ करना पड़ेगा… कोने-कोने में करने से कोई फायदा नहीं।"

यह उपाय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी एक हॉल या ज़ोन में स्टेरिलाइज़ेशन के दुष्प्रभाव दूसरे क्षेत्र से आ रही आबादी से जल्दी खत्म हो जाते हैं।
कई अन्य संस्थानों में भी समान प्रयास किए गए हैं:

- **IIT Bombay** में छात्रों ने एक *Stray Directory* तैयार की, जहाँ कुत्तों के नसबंदी और वैक्सीनेशन की स्थिति का रिकॉर्ड रखा जाता है, ताकि उन्हें नियमित रूप से निगरानी में रखा जा सके।

- **IIT Roorkee** जैसे संस्थान microchipping और sterilisation को लागू करके कुत्तों की पहचान और संख्या नियंत्रण दोनों की दिशा में कदम उठा रहे हैं।

इसे लागू करने के लिए परिसर को ज़ोन-आधारित योजना के साथ पूरी तरह एकीकृत अभियान चलाना चाहिए।

## 6.2 निर्धारित फीडिंग ज़ोन और प्रतिबंधित फीडिंग

यह सुझाव सीधे इंटरव्यू से आया था कि हॉल और कैंटीन के बाहर कुछ विशिष्ट जगहों पर कुत्तों को खाना देने की अनुमति दी जाए, जिससे उनकी आवाजाही नियंत्रित हो सके।

कई संस्थानों में *designated feeding sites* को लागू किया गया है:

- **IIT Madras** ने कुत्तों को सिर्फ़ पाँच निर्धारित फीडिंग साइट्स पर ही खाना देने जैसे नियम बनाए हैं, और अनधिकृत फीडिंग पर प्रतिबंध तथा जुर्माना भी रखा है।
- **IIT Bombay** जैसे संस्थानों में कुत्तों के लिए निर्देशित फीडिंग और पानी की व्यवस्था से उनकी निर्भरता campus के गलियों में घूमने पर कम की जा रही है।

आईआईटी कानपुर में भी समान तरह की व्यवस्था इससे ज़्यादा व्यवहारिक और सुरक्षित साबित हो सकती है, क्योंकि भोजन की गंध और उपलब्धता कुत्तों को सीधे हॉस्टल/मेस के आसपास खींचती है।

## 6.3 डॉग हाउस / शेल्टर स्पॉट

इंटरव्यू में एक अन्य ठोस सुझाव आया कि

> "दो-तीन हॉल के बीच एक-एक छोटा घर जैसा रखा जाए।"

यह शेल्टर न केवल कुत्तों को एक निर्धारित स्थान देगा, बल्कि उनके स्वास्थ्य, नसबंदी, टीकाकरण और निगरानी को भी आसान बनाएगा। यह देखभाल का संरचित रूप हो सकता है, जहाँ कुत्तों को आवास, पानी और चिकित्सा सहायता उपलब्ध हो।

## 6.4 प्रवेश नियंत्रण और भौतिक अवरोध

अन्य संस्थानों के अनुभव दिखाते हैं कि *physical barriers* और नियंत्रित प्रवेश कुत्तों के आवागमन को प्रभावी ढंग से सीमित कर सकते हैं। राष्ट्रीय हरित अधिकरण से जुड़े मामलों में ऐसी दिशा-निर्देश दिए जा चुके हैं कि नए कुत्तों का प्रवेश रोकने के लिए सर्वाधिक प्रवेश बिंदुओं पर भौतिक अवरोध लगाए जाएँ, ताकि कैंपस के भीतरी हिस्सों तक उनकी पहुँच सीमित रहे।

यह कदम विशेष रूप से अकादमिक ब्लॉकों, लाइब्रेरी, **LHC** जैसे महत्वपूर्ण शिक्षा-केंद्रों में उपयोगी हो सकता है।

## 6.5 उचित कचरा प्रबंधन और स्वच्छता सुविधाएं

स्वच्छता का सीधा सम्बन्ध कुत्तों की संख्या और व्यवहार से है। शोध एवं संस्थागत दिशानिर्देशों के मुताबिक, कचरा प्रबंधन का ध्यान रखना बेहद आवश्यक है, क्योंकि कुत्तों की बहुत बड़ी आबादी मानव-उत्पन्न कचरे पर आश्रित होती है।

इसका मतलब है:

- नियमित garbage pickup और overflow prevention
- कूड़ेदानों को *stray animal-proof* ढंग से डिज़ाइन करना
- खाने के अवशेषों को तुरंत हटाना

यह न सिर्फ़ कुत्तों को अट्रैक्ट होने से रोकेगा, बल्कि स्वास्थ्य जोखिम और अन्य जंतुओं की संख्या भी कम करेगा।

### <u>6.6 जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम</u>

कई संस्थानों ने न केवल नियंत्रण, बल्कि समुदाय को सहज सह-अस्तित्व और सुरक्षित व्यवहार के लिए जानकारी देने पर जोर दिया है। उदाहरण के लिए, CBSE जैसी व्यवस्था में पशु सुरक्षा और प्राथमिक उपचार पर शिक्षा शामिल है, जिससे समुदाय को तैयार किया जा सके।

आईआईटी कानपुर में भी AWC और जिमखाना मिलाकर ऐसे सेशंस आयोजित कर सकते हैं जहाँ:

- सुरक्षित व्यवहार कैसे करें
- अगर कोई dog bite हो तो क्या कदम उठाएँ
- कुत्तों के व्यवहार को समझना

जागरूकता से मनुष्यों और कुत्तों के बीच टकराव की संभावना कम होगी।

### <u>6.7 डेटा और निगरानी के लिए डिजिटल समाधान</u>

कुछ संस्थानों ने कुत्तों के बारे में डाटाबेस और विवरण रखे हैं, जैसे **IIT Bombay** का '*Stray Directory'* जहाँ कुत्तों का रिकॉर्ड, नसबंदी/टीकाकरण की स्थिति, गतिविधि पैटर्न आदि उपलब्ध हैं।

ऐसी निगरानी प्रणाली से यह आसानी से पता चलेगा कि कौन से कुत्ते आक्रामक हैं, किस ज़ोन में उनकी संख्या अधिक है, और आगे की रणनीति क्या हो।

# 7. समग्र निष्कर्ष: सुरक्षित और संवेदनशील सह-अस्तित्व की तलाश

आईआईटी कानपुर परिसर में कुत्तों की उपस्थिति का मुद्दा अत्यंत जटिल है जिसमें सुरक्षा की चिंताएं और पशु-कल्याण की भावनाएं एक-दूसरे के सामने खड़ी हैं। इस रिपोर्ट के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इसका समाधान किसी एक पक्ष को नजरअंदाज करके नहीं बल्कि संतुलन बनाकर ही निकाला जा सकता है।

### <u>1. विविध दृष्टिकोण और सह-अस्तित्व की चुनौती</u>

कैंपस में कुत्तों को लेकर छात्रों का अनुभव दो ध्रुवों में बंटा है। जहाँ एक बड़ा वर्ग सुरक्षा और स्वच्छता (जैसे पीछा किया जाना या मेस में गंदगी) को लेकर गंभीर तनाव में है, वहीं एक महत्वपूर्ण वर्ग ऐसा भी है जो इन कुत्तों के प्रति गहरा लगाव रखता है। इन छात्रों के लिए कुत्ते तनाव कम करने और अकेलेपन को दूर करने का जरिया हैं। अतः चुनौती यह नहीं है कि कुत्तों को पूरी तरह हटाया जाए, बल्कि चुनौती यह है कि एक ऐसा रास्ता खोजा जाए जिससे दोनों वर्ग कुत्तों से डरने वाले और उनसे प्रेम करने वाले शांति से

रह सकें।

**2. संस्थागत प्रयास और संवाद की कमी**

एनिमल वेलफेयर सेल (AWC) और जिमखाना के प्रयासों (नसबंदी और टीकाकरण) के बावजूद, जमीनी स्तर पर असंतोष बना हुआ है। इसका मुख्य कारण प्रशासन और छात्रों के बीच संवाद का अभाव है। कानूनी सीमाएँ (PCA Act) प्रशासन को कुत्तों को हटाने से रोकती हैं, लेकिन छात्रों की अपेक्षाएं सुरक्षा को लेकर हैं। इस 'डेडलॉक' को तोड़ने के लिए संस्थागत ढाँचे को और अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनाने की आवश्यकता है।

**3. समाधान: सह-अस्तित्व का व्यावहारिक मॉडल**

रिपोर्ट यह सुझाती है कि "सह-अस्तित्व" (Co-existence) केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक व्यवस्थित प्रबंधन होना चाहिए। अन्य आईआईटी के सफल मॉडलों के आधार पर, कानपुर कैंपस में भी निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- निर्धारित फीडिंग ज़ोन: जिससे कुत्तों की मेस और हॉस्टल गलियारों में आवाजाही कम हो और गंदगी की समस्या सुलझे।
- डिजिटल निगरानी और डेटा: आक्रामक और बीमार कुत्तों की पहचान के लिए 'डॉग डायरेक्टरी' जैसा सिस्टम।
- सामूहिक जिम्मेदारी: कचरा प्रबंधन को बेहतर बनाना ताकि कुत्ते भोजन की तलाश में संवेदनशील क्षेत्रों में न आएं।

संक्षेप में, यह मुद्दा केवल "कुत्तों की संख्या" का नहीं, बल्कि परिसर के प्रबंधन का है। एक ऐसा साझा तंत्र विकसित करना अनिवार्य है जहाँ पशु अधिकार सुरक्षित रहें और छात्रों की सुरक्षा व स्वच्छता से भी कोई समझौता न हो। वास्तविक सह-अस्तित्व तभी संभव है जब प्रशासन, छात्र और पशु-प्रेमी मिलकर एक ऐसी नीति पर काम करें जो सहानुभूति और सुरक्षा, दोनों को समान महत्व दे।

# 8. सन्दर्भ


1)https://www.newindianexpress.com/amp/story/cities/chennai/2020/Sep/15/iit-m-bars-unauthorised-feedingof-stray-dogs-introduces-regulations-2196933.html

2) *Supreme Court orders nationwide removal of stray animals from public spaces and highways*, Supreme Today AI — https://news.supremetoday.ai/supreme-court-orders-nationwide-removal-of-stray-animals-from-public-spaces-and-highways-20251107115235bdfb05

*3)* *Supreme Court flags public safety concerns in stray dog management*, India Legal — https://indialegallive.com/constitutional-law-news/courts-news/supreme-court-flags-public-safety-concerns-in-stray-dog-management/

*4)* *Court orders stray dogs in New Delhi released after sterilisation*, AP News — https://apnews.com/article/62b97a8aae5061dc56d431b3a109138d

5) *Animals Welfare Group – IIT Bombay campus stray dog initiative* —
https://www.ee.iitb.ac.in/~belur/animals/

6) *Measures initiated to address rise in IIT-Roorkee campus stray dogs*, Times of India —
https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/measures-initiated-to-address-rise-in-iit-roorkee-campus-stray-dogs/articleshow/107541023.cms

7) *After outcry, IIT Madras sets up zones to feed stray dogs*, EdexLive —
https://www.edexlive.com/news/2020/Sep/18/after-outcry-iit-madras-sets-up-zones-designates-time-to-feed-stray-dogs-on-campus-14657.html

8) *Microchips for stray dogs inside IIT-Madras*, New Indian Express —
https://www.newindianexpress.com/cities/chennai/2020/Dec/13/microchips-for-stray-dogs-inside-iit-madras-2235517.html